हिन्दी - विभाग
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

डॉ० कविता कुमारी सिंह

स्नातक पार्ट - 03

विषय — 'कलम का सिपाही' के आधार पर प्रेमचन्द की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं साम्प्रदायिक सद्भाव —

'कलम का सिपाही' के जीवनीकार अमृतराय ने बतलाया है कि साहित्यकार अतीत का गौरव गायक वर्तमान का सूक्ष्म द्रष्टा एवं भविष्य का सुहाग साथी होता है। उसके एक हाथ में दूरबीन रहता है और दूसरे हाथ में खुर्दबीन। दूरबीन से दूर की वस्तुओं का अवलोकन करता है, जबकि खुर्दबीन से सूक्ष्म से सूक्ष्म वस्तुओं का अवलोकन कर ऐसा सेतु प्रस्तुत करता है जो भविष्य के लिए मंगलदायक होता है। प्रेमचन्द ही साहित्यकार थे, जिनके साहित्य में अतीत का गौरव गान, वर्तमान का चारु चिन्तन एवं भविष्य का सुन्दर सपना समाहित है।

साहित्यकार युग का प्रहरी होता है वह पहरा देता है अपने चतुर्दिक वातावरण

पर्यवेक्षण करता है। 'सिपाही' यार प्रहरी चोर या डाकू और गिरहकटों से पहरा देता है, जबकि कलम का सिपाही अपनी कलम की बदौलत जन-सैलाब पैदा करता है। उसकी कलम में ताकत होती है। 'अमृत राय' लिखित 'कलम का सिपाही' ऐसा ही प्रहरी है जो महाभारत के संजय की तरह सारी घटनाओं को देखता है।

प्रेमचन्द के समय में समाज में कुरीतियाँ ही कुरीतियाँ फैली हुई थीं। चारों तरफ अशिक्षा, बेरोजगारी, छुआछूत, अंधविश्वास फैली हुई थी। पंडित पोंगापंथी बन गये थे। जवान लड़कियाँ विधवा बन गलत रास्ते को अपना रही थीं। ऐसी स्थिति में प्रेमचन्द ने अपनी पत्नी की मृत्यु के उपरान्त विधवा बालिका शिवरानी से शादी कर क्रांतिकारी कदम उठाया। समाज में बेईमानी, अन्याय, ढकोसलों पर चोट करना लेखक का लक्ष्य है। औरत को खोलने की इजाजत नहीं है। समाज में सबसे कोढ़ जवानी में विधवा हो जाना है। औरत

की एक भूल उसे स्वर्ग से नरक में पहुँचा देती है, पर
मर्द से हजार भूलें हो जाती हैं, उसे समाज माफ
कर देता है, यह कैसी सामाजिक विडम्बना है। प्रेमचन्द
जी इसी सामाजिक जहर को समाप्त करना चाहते हैं।

देश में आर्थिक विषमता चरमोत्कर्ष पर
थी। अंग्रेजों के द्वारा शोषण अलग चल रहा था, जबकि
स्थानीय जमींदार या नवाब द्वारा अलग। अतः जे
अमीरों की चाँदी थी, वहीं गरीबों की बदनसीबी। प्रेमच
ने अपने समय की आर्थिक विषमता का जो चि
खींचा है, वह बड़ा ही दर्दनाक है। अधिकारियों के जी
दर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा है - "जिन
खा सकते हैं, खाते हैं, बार-बार खाते हैं जो
नहीं खा सकते, वह घर भेजते हैं, घी से भरे
कनस्टर, दूध से भरे मटके, उपले, लकड़ी, घा
और चारे से भरी हुई गाड़ियाँ शहरों में आ
जाती है। "गाँव वालों के लिए बड़े संकट के
होते हैं। उनकी सामत आ जाती है, मार

दासत्व के दारुण आघातों से आत्मा का भी ह्रास हो जाता है। पुनः खेती पर निर्वाह करना कठिन हो गया है। कोई एक जून चना चबाता है तो दूसरी जून रोटी-साग। किसी को वह भी नहीं मिल पाता। वह चुटकीभर सत्तू खाकर रह जाता है।"

इस प्रकार आर्थिक विषमता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कर प्रेमचन्द ने भारतीय गरीबी की चित्रावली प्रस्तुत की है।

जहाँ तक सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रश्न है, हिन्दू और मुसलमान में सौहार्दपूर्ण वातावरण नहीं था। दोनों पक्ष अपनी-अपनी ढपली बजा रहे थे और बीच में अंग्रेज अपनी दुकानें चला रहे थे, पर कालान्तर में मुस्लिम लीग और कांग्रेस पार्टी में समझौता हुआ, और दोनों ने अंग्रेजों की फूट डालो और शासन करो की नीति को समझा और एकजुट होकर अंग्रेजी शासन का विरोध तथा राष्ट्रीय आन्दोलन को मजबूत करने में जुट गये।